TEACHER'S HANDBOOK

हिंदी व्याकरण–6

उत्तर पुस्तिका

FRANKLIN

सृष्टि हिन्दी व्याकरण-6

PART - 6

Ch-1 (भाषा , और व्याकरण)

क- लिखित और मौखिक

ख- भाषा को लिखने और बोलने के लिए हम जिस मापन की कसौटी का प्रयोग करते है उसे व्याकरण कहते है।

1. क- भाषा व्यक्तियों के मनोभावों को व्यक्त करने का सशक्त माध्यम है।
   ख- भारतीय संविधान में अनुछेद 343(1) के अनुसार हिंदी हमारे देश की राष्ट्रभाषा है। इस अनुछेद में यह व्यवस्था की गई है कि भारतीय संघ कि राजभाषा हिंदी है और इसकी लिपि देवनागरी है। प्रत्येक 14 सितम्बर 1949 को प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को हिंदी दिवस मनाने की घोषणा कि गई।
   ग- भाषा को लिखने का ढंग लिपि कहलाता है।
2. क- पढ़ना ख- लिखना ग- सुंनना घ- बोलना
3. क-रोमन ख- देवनागरी ग-गुरुमुखी घ- गुजरती
   ड- देवनागरी
4. क22 ख- 14 सितम्बर ग-देवनागरी घ- ये सभी
   ड- इनमें से कोई नहीं
5. Do it yourself. 6- Do it yourself.

Ch-2 (वर्ण विचार)

क- वर्ण दो प्रकार के होते है- स्वर और व्यंजन।

ख- स्वर के तीन भेद होते है- ह्रस्व स्वर, दीर्घ स्वर, प्लुत स्वर।

ग- व्यंजन के तीन भेद होते है- स्पर्श,अंतःस्थ और उष्म व्यंजन।

1. क- भाषा की सबसे छोटी और सार्थक ध्वनि जिसके टुकड़े नहीं किये जा सकते वर्ण कहलाती है।
   ख- किसी शब्द के निर्मित होने में जितने भी वर्ण सम्मिलित होते है उनको अलग-अलग करना वर्ण विच्छेद कहलाता है। जैसे- काम = क +आ +म + अ
   ग- जब किसी शब्द में 'र' वर्ण अ रहित रूप में प्रयोग हुआ हो तब रेफ़ को व्यवहार में लाया जाता है। जैसे- गर्म, बर्फ़
2. क- व + इ + द +अ + य + आ + ल + अ + य+ आ।
   ख-अ+ध्+य्+आ+प्+अ+क्+अ ग- क् + अ + क् +ष् + आ
   घ- क् + अ + ह् + आ + न् + ई ड- म् + अ + ह् + इ + ल् + आ
3. क- कविता ख- वर्णमाला ग- उद्यान घ- विद्यार्थी
4. सज़ा, बाग़, रराज़, ख़ाना, फ़न, साफ़, कर्ज़, हररोज़, ख़ुशफ़हमी, हमसफ़र
5. चाँद, आँचल,हँसना,मेहँदी,काँपना,टाँग,ताँगा,कुआँ,भाँग,गँवार
6. पक्का, बच्चा, पत्ता, चम्मच, विद्या, सत्य
7. कक्षा, क्षमा, त्रिशूल, त्रिकोण, ज्ञान, ज्ञानी, श्रम, परिश्रम
8. Do it yourself. 9- Do it yourself.

Ch-3 (शब्द विचार)

क- वर्णों के सार्थक समूह को शब्द कहते है।

ख-अर्थ के आधार पर शब्दों के नौ भेद है।

ग- संस्कृत के वैसे शब्द जिनका प्रयोग ज्यों- का- त्यों हिंदी भाषा में किया जाता है, वे तत्सम शब्द कहे जाते है।

1. क- वर्णों के सार्थक समूह को शब्द कहते है। वर्णों के मेल से सार्थक शब्द का निर्माण होता है।

   ख-शब्दों के दो भेद होते है- सार्थक और निरर्थक। जिनमें सार्थक शब्दों में पर्यायवाची, विलोम, अनेकार्थी शब्द, एकार्थी शब्द,वाक्यांशबोधक शब्द आदि आते है।

   ग- संस्कृत के वैसे शब्द जिनका प्रयोग ज्यों- का- त्यों हिंदी भाषा में किया जाता है, वे तत्सम शब्द कहे जाते है। जबकि वे शब्द जिनको संस्कृत भाषा से परिवर्तित करके हिंदी भाषा में अपना लिया जाता है उन्हें तत्भव शब्द कहते है।

   घ- आगत ध्वनियाँ तीन होती है। अर्ध चंद्राकर, नुक्ता, अयोगवाह: जैसे डॉक्टर, राज़,प्रातः

   ड- ऐसे शब्द जो दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बनते है योगिक शब्द कहलाते है जैसे- पुस्तक+आलय= पुस्तकालय। जबकि योगरूढ़ शब्द वे होते है जिनका अर्थ किसी अन्य के लिए निश्चित समझ लिया जाता है जैसे- दशानन (रावण के लिए)
2. सियार, दूध, कपूर, मक्खी, पर्यटक, चिड़िया, मोर, हाथी
3. योगिक, योगरूढ़, योगिक, योगिक, योगिक , योगिक, योगिक, योगिक
4. Do it yourself. 5- Do it yourself.

Ch-4 (संज्ञा)

क- ऐसे संज्ञा शब्द जिससे किसी धातु,द्रव,सामग्री,पदार्थ आदि का बोध हो उसे द्रववाचक संज्ञा कहते है। जैसे डप लीटर तेल, आटा

ख- सैनिकों की टुकड़ी, ऊँटों का झुण्ड।

1. क- ऐसे संज्ञा शब्द जिससे किसी व्यक्ति, स्थान, वस्तु, भाव आदि का बोध हो संज्ञा शब्द कहलाते है। जैसे रणधीर हरे-भरे खेतों की हरियाली देखकर ख़ुशी से झूम उठा।

   ख- व्यक्तिवाचक संज्ञा -ऐसे शब्द जिनसे किसी विशेष वस्तु,विशेष प्राणी, विशेष प्रजाति आदि का बोध हो वह व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलाती है, जैसे- अटल बिहारी वाजपेयी, सहनीवाल गाय आदि।

   जातिवाचक संज्ञा - ऐसे शब्द जिनसे किसी व्यक्ति,वस्तु, स्थान आदि की जाति का बोध हो उसे जातिवासाहक संज्ञा कहते है,ज जैसे- सैनिकों की टुकड़ी, सुनैला आम आदि।

   ग- ऐसे सज्ञा शब्द जिनसे किसी व्यक्ति,वस्तु,स्थान अदि के गुण, अवस्था, दिशा आदि का बोध हो वह भाववाचक संज्ञा कहलाती है।

   जातिवाचक,जातिवाचक, भाववाचक, भाववाचक, भाववाचक, जातिवाचक, व्यक्तिवाचक, भाववाचक, भाववाचक, भाववाचक

3. ख- जातिवाचक ग- व्यक्तिवाचक घ- भाववाचक
ड-जातिवाचक च- जातिवाचक छ- भाववाचक

4. व्यक्तिवाचक- लखनऊ,करोना, भारत, ऐरावत,आकाश, कालिया, समुन्दर
जातिवाचक- गाय,जामुन, पहाड़,नारियल, स्विफ्ट कार
भाववाचक- चतुराई,उदासी, उदारता,खुशी, मित्रता, बचपन

5. तिरंगा-व्यक्तिवाचक, सेना-जातिवाचक, कक्षा- जातिवाचक, खरगोश जातिवाचक, गंगा-व्यक्तिवाचक,
सोना- जातिवाचक, रामायण- व्यक्तिवाचक

6. Do it yourself. 7- Do it yourself. 8- Do it yourself.

Ch-5 (लिंग)

क- लिंग के दो भेद होते हैं- स्त्रीलिंग और पुल्लिंग।
ख- लोमड़ी, गिलहरी,मक्खी,मछली ।
ग- मगरमछ, बाज़, खरगोश।

1. क- जिन शब्दों से स्त्री या पुरुष का बोध हो उसे लिंग कहते है। जैसे- लड़की, लड़का
ख- पुल्लिंग शब्द पुरुष जाति का बोध करवाते है जबकि स्त्रीलिंग शब्द स्त्री जाति का बोध करवाते है।
ग- पुल्लिंग शब्द से स्त्रीलिंग बनाते हुए स्त्रीलिंग शब्द के अंत में 'आ, आइन,एक्का,आनी,नी, आदि में बदल जाते है।

2. क- पुजारिन ख- हथनि ग- नाइन घ- कुम्हारिन
ड-अध्यापिका च- लुहारिन छ- जाटनी ज- धोबिन

3. अनुजा,हथनि,मादा कछुआ,मालिन,चुहिया,स्त्रीलिंग,पुल्लिंग,पुल्लिंग, पुल्लिंग,पुल्लिंग,पूर्णिमा

4. बाल-पुल्लिंग, विदुषी-स्त्रीलिंग, लुहार-पुल्लिंग, शेरनी-स्त्रीलिंग, नायक पुल्लिंग, बाला-स्त्रीलिंग, बैल- पुल्लिंग, पूर्णिमा-स्त्रीलिंग, कुमहरिन स्त्रीलिंग,पेड़-पुल्लिंग,अंग्रेज़-पुल्लिंग

5. क- नायक ख- लेखिका ग- लड़कियाँ घ- श्रीमती
ड- स्त्रीलिंग च- सेठानी छ- नर मछली

6. पुल्लिंग-तोता,शेर,बेर,आम,पपीता,मगरमछ,
स्त्रीलिंग-बकरी,अरबी,लीची,नागिन,नर्मदा,कुम्हारिन,कुर्सी,तोती

7. क- पेड़ों पर बंदरिया कूद रही है। ख- जांगले में हिरणी दौड़ रही है।
ग- मुर्गियां इधर-उधर भाग रही है। घ- लड़के झूल रहे है।
ड- महिला मेला देख रहीं हैं।

8. Do it yourself.... 9- Do it yourself.

Ch-6 (वचन)

क-एकवचन और बहुवचन। ख-ताले, मालाएँ।

1. क- जिन शब्दों से एक-अनेक की जानकारी मिलती है उन्हें वचन कहते है।
ख-जिन शब्दों से एकवचन की जानकारी मिले उन्हें एकवचन कहते है।
ग- एकवचन में संख्या में एक तथा बहुवचन में संख्या में अनेक का बोध होता है।
घ- जब संज्ञा एकवचन हो तब क्रिया भी एकवचन में आती है जबकि संज्ञा के बहुवचन होने पर क्रिया भी बहुवचन में हो जाति है। जैसे- लड़का खेल रहा है, लड़के खेल रहे हैं।
2. रुपये,बहुएँ, पट्टी,लत्ता,बस्तें, विद्यार्थी,छात्रों, गाय,पक्का,डिबियाँ,सेनाएं,धातुएँ
3. क- जिन शब्दों से एक-अनेक की जानकारी मिलती है उन्हें वचन कहते है।
ख-मेले में घोड़े दौड़ने लगे।
ग- भारत में ऋतु आती है।
घ- भारत देश को त्योहारों का देश कहा जाता है।
4. एकवचन-भैंस,दही,नदी,पानी,रात,महिला,पुड़िया,दूध
बहुवचन-दुकानें,स्त्रियां,पक्षीवृन्द,पाठकवर्ग,धेनुएँ,
5. Do it yourself. 6- Do it yourself. 7- Do it yourself. 8- Do it yourself.

Ch-7 (सर्वनाम)

क-सर्वनाम। ख-वह मेरी कार है। ग- प्रश्नवाचक।

1. क- वे शब्द जो संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किये जाते है सर्वनाम कहलाते है।
ख-पुरुषवाचक और निश्चयवाचक।
ग- वे सर्वनाम शब्द जिनका प्रयोग स्वयं के लिए किया जाता है निजवावाचक सर्वनाम कहलाता है। जैसे-स्वयं,अपनेआप,खुद।
घ- मैं घर जा रहा हूँ। हम साथ है। वे वहाँ जा रहे है।
2. ख- निजवाचक ग- प्रश्नवाचक घ- निश्चयवाचक
ड- निजवाचक च- पुरुषवाचक
3. क- मैंने ख- उस ग- उसको
घ- मैं ड- किसीका च- इस
4. निजवाचक,माध्यम पुरुष,उत्तम पुरुष,निजवाचक,सम्बन्धवाचक, अनिश्चयवाचक,निश्चयवाचक
5. Do it yourself. 6- Do it yourself. 7- Do it yourself. 8- Do it yourself.

Ch-8 (विशेषण)

क- ब्लू रंग। ख- हमारे देश के सैनिक वीर है।

1. क- वे शब्द जो संज्ञा,सर्वनाम शब्द की विशेषता बताये उन्हें विशेषण कहते है।

ख- मूलावस्था,उत्तमावस्था,उत्तरावस्था के आधार पर विशेषण की तुलना की जा सकती है।

ग- ऐसी चीज़ें जिनका माप-तोल किया जा सकता है उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं, जबकि जिन चीज़ों को गिना जाता है उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते है।

घ- ऐसे शब्द जो संघ्या के स्थान पर प्रयुक्त किये जाये, वे तो सर्वनाम होते है। किन्तु जो शब्द संघ्या शब्दों से पहले लगकर विशेषण का कार्य करते है, वे सर्वनामिक विशेषण कहते है।

2. ख- गुणवाचक ग- परिमाणवाचक घ- सार्वनामिक विशेषण
ड- गुणवाचक च- अनिश्चित संख्यावाचक छ-अनिच्छित परिमाणवाचक
ज- निश्चित परिमाणवाचक झ- गुणवाचक
3. बनावटी,चलो,निचला, ऐसा,जैसा,खेल,भीतरी,रोगी,ग्रामीण, तैराक
4. कंजूस-पीली-नमकीन-मज़बूत (गुणवाचक),
थोड़ा-थोड़ी-कुछ(परिमाणवाचक), चार मीटर,बारह (संख्यावाचक)

Ch-9 (क्रिया)

क- पढ़,लिख ख- दौड़ रहा है। ग- राम खाना खा रहा है।

1. क- जिस शब्द से किसी काम के होने या करने का बोध हो उसे क्रिया कहते है।
ख- जिस वाक्य में क्रिया के साथ कर्म हो या क्रिया का प्रतक्ष फल कर्ता पर पड़े उसे सकर्मक क्रिया कहते है, जबकि क्रिया के साथ कर्म न होने पर सकर्मक क्रिया कहते है।
ग- श्याम क्रिकेट खेल रहा है।
2. क- सकर्मक क्रिया ख- सकर्मक क्रिया ग- सकर्मक क्रिया
घ- अकर्मक क्रिया ड- सकर्मक क्रिया च- सकर्मक क्रिया
छ- सकर्मक क्रिया
4. क- तैरना ख- लिखना ग- पढ़ी
घ- सोना ड- रोना
5. Do it yourself. 6- Do it yourself. 7- Do it yourself.

Ch-10 (काल)

क- काल से हमें क्रिया करने के समय का पता चलता है।

ख- काल के तीन भेद होते है। ग- भूतकाल।

1. क- क्रिया के जिस रूप से उसके करने या होने के समय का पता चले उसे काल कहते है।
ख- काल के तीन भेद होते है- न्हूतकाल, वर्तमानकाल, भविषयकाल।
ग- क्रिया के जिस रूप से कार्य के भविष्य में या आने वाले समय में पूरा होने वाले कार्य का पता चले उसे भविष्यकाल कहते है।
घ- सामान्यभूत, आसन्नभूत, पूर्णभूत, अपूर्णभूत, संदिग्धभूत, हेतुहेतुमद भूत।
ड- सामान्य भविष्य, सम्भाव्य भविष्य, हेतुहेतुमद भविष्य।

2. ख- भविष्यकाल ग- भूतकाल घ- वर्तमानकाल
ड- भूतकाल च- वर्तमानकाल छ- भविष्यकाल
3. क- वायुयान यूरोप से चलकर नई दिल्ली पहुंचेगा।
ख- दादाजी को कल डॉक्टर को दिखाया जा चूका है।
ग- अनूप जलोटा प्रेक्षागृह में अनेक भजन सुना रहे है।
घ- बच्चे किताब-कापियां नहीं खरीद पाएंगे।
ड- प्रतिदिन व्यायाम,प्राणायाम करने से क्रोना नहीं हुआ।
4. क- थे ख- होंगी ग- गया घ- उड़ेगा
5. Do it yourself. 6- Do it yourself. 7- Do it yourself.

Ch-11 (संधि)

क- व्यंजन संधि का। ख- विसर्ग संधि।
1. क- वर्णों के मेल से उत्पन विकार को संधि कहते है।
ख- संधि-युक्त शब्दों को अलग-अलग करना संधि-विच्छेद कहलाता है।
ग- जब कभी ह्रस्व अथवा दीर्घ अ,इ,उ के बाद ह्रस्व अथवा दीर्घ अ,इ,उ आएं तो दोनों के मेल से दीर्घ आ,ई,ऊ बनता है, तब यह दीर्घ संधि कहलाती है।
घ-व्यंजन वर्णों का व्यंजन के साथ अथवा व्यंजन वर्णों का स्वरों के साथ मेल होने से जो विकार या परिवर्तन उत्पन हो जाता है वह व्यंजन संधि कहलाती है
ड- जब विसर्ग का किसी स्वर या व्यंजन के साथ मेल हो जाता है और उसमें जो परिवर्तन आ जाता है तब विसर्ग संधि बनती है। जैसे - प्रातः नमः
2. क- वाङ्मय ख- उधार ग-सदैव घ- इतियादी ड- नदीश
च- विद्यार्थी छ- दिगंत ज- अनेव झ- महाऐश्वर्य मनोकामना, एकैक
3. नाव+इक, स्व+आगत, मत+ऐक्य , गिर+ईश ,नर+इन्द्र, विद्या+आलय, महा+ईश, देव+आगमन, पितृ+आज्ञा, सत+भावना, अभी+सेक
4. क- iv ख- ii ग-i घ- i
5. Do it yourself. 6- Do it yourself.

Ch-12 (समास)

क- तत्पुरुष। ख- कर्मधारय समास।
1. क- शब्दों के समूह को संक्षिप्त करके न्य शब्द बनाने की प्रक्रिया को समास कहते है।
ख- ऐसा समास जिसका उत्तरपद प्रधान होता है और समस्त पदों में विभक्ति का लोप हो जाता है तत्पुरुष समास कहलाता है जैसे- राजा का पुत्र।
ग-जिस समास के दोनों पदों में विशेषण-विशेष्य और उपमय-उपमान का सम्बन्ध होता है वह कर्मधारय समास कहलाता है, जबकि बहुव्रीवी में पहला दूसरे न होकर तीसरा पद प्रधान होता है।
घ-समस्त पदों का विग्रह करना समास विग्रह कहलाता है,जबकि समस्त पदों का मेल समस्तपद कहलाता है।

2. क- राजा का पुत्र=तत्पुरुष ख-गगन के समान ऊँचा= कर्मधारय
ग-गज के समान सर= कर्मधारय घ- तीन राहों वाला= दिगुसमास
ड- हाथ के हाथ= तत्पुरुष
3. क- कर्मधारय ख-बहुव्रीवी ग-द्वन्द समास
घ- दिगुसमास ड- तत्पुरुष च-अव्वयीभाव
4. लम्बोदर,पंजाब,चतुर्भुज,अनजान,त्रिभुज,जेबखर्च
अकालपीडित,नवरतन,क्रोधाग्नि,सुलोचना,कमलचरण,पंकज
5. Do it yourself. 6- Do it yourself. 7- Do it yourself.

Ch-13 (कारक)

क- सम्बन्ध कारक। ख- कारक के 8 भेद होते है।
ग-अधिकरण कारक।

1. क- संज्ञा या सर्वनाम के जिस किसी रूप में उसका सम्बन्ध वाक्य के अन्य शब्दों या क्रियाओं से जाना जाता है, उसे कारक कहते है।
ख- वाक्य में जब क्रिया का फल प्रत्यक्ष रूप से कर्ता पर न पड़कर वाक्य के अन्य संज्ञा या सर्वनाम शब्द पर पड़ता है उसे कर्म कारक कहते है। जबकि कर्ता कारक जिसके लिए कार्य कर्ता है या कुछ देता है तो वह सम्प्रदान कारक कहलाता है।
ग-संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसे, अलग होने,तुलना करने का पता चलता है तो अपादान कारक कहलाता है। जैसे- यह पुःतक मेरी है।
घ-कर्ता कारक जिसके लिए कार्य करता है अथवा जिसे कुछ देता है उसके साथ लगी विभक्ति सम्प्रदान कारक कहलाती है।
2. क- अपादान कारक ख-कर्म कारक ग-अधिकरण कारक
घ- अधिकरण कारक ड- सम्बन्ध कारक
3. क- ने ख-की ग-से घ-से ड- के लिए
4. क- राधा की बहन निति की मौसी है। ख- मैं आगरा से निकलता हूँ।
ग-तिनका-तिनका से जोड़ना पड़ता है। घ-पक्षीगण डाल पर बैठे हैं।
5. Do it yourself. 6- Do it yourself.

Ch-14 (उपसर्ग)

क- प्र। ख- अनादर,सहपाठी।

1. क- ऐसे शब्दांश जो शब्द से पहले आकर शब्द के अर्थ में परिवर्तन कर देते है उपसर्ग कहलाते है। जैसे- प्रकाश,प्रभाव
ख- संस्कृत के उपसर्ग,हिंदी के उपसर्ग,उर्दू के उपसर्ग,संस्कृत के अव्यय।
ग-उपसर्ग शब्द का प्रयोग मूल शब्द के साथ किया जाता है, जैसे-उप (उपसर्ग) +हार= उपहार

2. गैरज़िम्मेदार,गैरसरकारी,बिनबुलाये,बिनबताये,सुविचार,सुकुमार,हरपाल हरदम,परलोक,परनिंदा,कमज़ोर,कमखर्च,नासमझ,नाकाम,अ बन,अनंत,अधपक्का,अधकचरा,विकार,विचार,परिचय,परिहास,खुशबु, खुशदिल, विकार,विचार,परिचय,परिहास,खुशबु,खुशदिल
3. बदसूरत,बेअक्ल,पाबंध,निर्बल,आजीवन,साकार,उत्थान,बतमीज़
4. क- iv ख-iii ग-iv घ- iii
5. अन्न+पढ़, परि+चय, बिना+वजह, सेह+योग, पर+नानी, परि+कूल, प्रति+दिन,सम+सार, अंत:+मन, कु+पूत, चिर+काल,हम+शकल, प्र+गति
6. प्रवेश,संकल्प,अत्याचार,हमजोली,दुर्दशा,अनुकूल,स्वागत,अनेक,कमअ ल,विस्मरण,निकम्मा,अधोभाग,निसंतान,अपव्यय,सदाचार
7. Do it yourself. 8- Do it yourself.

Ch-15 (प्रत्यय)

क- आवत,पढ़ाई ख- सुंदरता, कटुता।

1. क- ऐसे शब्दांश जो शब्द के अंत में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन और विशेषता ला देते हैं उसे प्रत्यय कहते हैं, जैसे- सुंदरता,लिखावट।
   ख- प्रत्यय के दो भेद होते हैं- कृत प्रत्यय और तदधित प्रत्यय। यह किताब मैंने पढ़ी हुई है।
   ग-वे प्रत्यय जो किसी क्रिया अथवा धातु के अंत में जुड़कर संज्ञा और विशेषण शब्दों की रचना करते हैं उसे कृत प्रत्यय कहते हैं, जैसे- मुझे बहुत थकान है।
2. लकड़+हारा, बंग+आली, बिछ+औना, हों+हार, पूज्य+नीय, घबरा+आहट, सज+आवत, बिक+आउ, भूल+अकड़, देन+दार, पिस+आई, लु+हार, मौसा+एरा, सरल+ता, अड़ी+यल
3. पढ़ाई-लिखाई, निवास-विश्वास,पतियाँ-लड़ियाँ, पानवाला-हिम्मतवाला, सुनेहरा-घनेरा ,खानदान-कूड़ेदान, घूसखोर-गोताखोर, रसाव-गिल्लाव, थकान-ढ़लान, सुंदरता-करूपता, कोणी-बोनी
4. सु+पठ+इत्, अभी+मान+ई, अ+विज+इत्, प्र+चल+इत्, बदबू+दार, अनु+करण+इय
5. क-ii ख-iii ग- iv घ-iv
6. Do it yourself. 7- Do it yourself.
8. Do it yourself. 9- Do it yourself.

Ch-16 (अनेक प्रकार के शब्द)

क- हरि ख- विलोम शब्द,पर्यायवाची,अनेकार्थी,वाक्यांशबोधक, श्रुतिसमभिनार्थक शब्द

1. क-हरि ख- विलोम शब्द,पर्यायवाची,अनेकार्थी,वाक्यांशबोधक, श्रुतिसमभिनार्थक शब्द।
   क- ऐसे शब्द जिनसे किसी शब्द का समान अर्थ निकलता है वे पर्यायवाची शब्द कहलाते है, जैसे- जल,नीर,वरि।
   ख- ऐसे शब्द जिनके एक से अधिक अर्थ होते है अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं, जैसे- हरि- मनुष्य,मेंढक, साँप,पानी।
   ग- वे शब्द जो सुनने में समान लगते है किन्तु अर्थ में भिन्नता होती है उन्हें श्रुतिसमभिनार्थक शब्द कहते है, जैसे- शोक(दुःख) शौक (रूचि)।
   घ- वे शब्द जो अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द प्रयोग होकर भाषा में सुंदरता लेट है वाक्यांशबोधक शब्द कहलाते है।
   ड- वे शब्द जो सुनने में समान लगते है किन्तु अर्थ में भिन्नता होती है उन्हें श्रुतिसमभिनार्थक शब्द कहते है, जैसे -गृह=घर, ग्रह= नक्षत्र। जबकि ऐसे शब्द जिनके इक से अधिक अर्थ होते है अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं, जैसे- सुर= ताल,देवता,स्वर ।
2. क- दुरूपयोग ख- अनावश्यक, ग-विदेश घ- कुपुत्र
   ड- लायक, च-नरक, च- मरण
3. अनल-पावक, जल-नीर, अम्बर-आकाश, तरु-वृक्ष, शेर-वनराज, मयूर-सारंग, मेघ-जलज, मतस्य-मीन, पवन-समीर
4. क-आसमान में काले घन छाए हुए हैं।
   ख-बरखा होने से सरिता में बाढ़ आ गयी।
   ग- करोना समय में खुदको बचाना ही उचित है।
   घ- बारव्ही की परीक्षा में ज्यादातर बच्चे सफल रहे।
   ड- वृक्षों पर बैठकर चिमटा चहचहा रही हैं।
   च- जंगल में वनराज गर्जना कर रहे हैं।
   छ- मरुस्थल में मृग दौड़ रहे है।
5. क- वार्षिक ख- जिज्ञासु ग- विशेषज्ञ घ-कृतज्ञ
   ड- दूरदर्शी च-दुर्गम छ- निष्पक्ष ज-अल्पज्ञानी
6. Do it yourself.
7. Do it yourself.

8. हस्ती,अस्सी,धेनु,मेला
9. क- सरिता,तटनी ख- लाजवंती ग- धनुधर घ-स्कूल, पाठशाला
ड- समुन्द्र,रत्नाकर च-पंकज, जलज छ- दयालु ज-लुहार
झ-नास्तिक गोद,संख्या ट- सोना, गेहू ठ- बाण,किनारा
ड- बिजली,दामिनी

Ch-17 (मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ)

क- लोकोक्ति ख- पूर्णता का अभाव

1. क-मुहावरे अपना शाब्दिक अर्थ छोड़कर विशेष अर्थ प्रदान करते है।
ख- मुहावरे अधिकतर शारीरिक अंगों के नाम पर बनते है, जबकि लोकोक्ति अनुभव पर आधारित होती है। मुहावरे वाक्य के बीच में लगते है,जबकि लोकोक्ति वाक्य के अंत में लगती है।
ग- लोगों द्वारा कहीं गयी अनुभव आधारित बातों को लोकोक्ति कहा जाता है।
2. ख-मुहावरा ग- मुहावरा घ- मुहावरा ड-लोकोक्ति च-मुहावरा छ- लोकोक्ति ज- लोकोक्ति झ-लोकोक्ति
3. क- शरम करना ख- बुरी तरह हराना ग- चुगली करना
घ- हँसना ड- कड़ी सज़ा देना च-दुश्मनी मोल लेना
4. Do it yourself.
5. क- बहुत पुराणी बात दोहराना- जब भी चुनाव आता है तो हमारे देश के नेताओं ने हिंदू मुस्लिम वोटों के चक्कर में गड़े मुर्दे उखाड़ना शुरू कर देते हैं।
ख- काम बिगड़ना- विवाह मे सब अच्छी तरह से काम चल रहा था पर जब फैरे होने लगे तो आंधी व बारिश ने आकर काम को गुड़ गोबर कर दिया।
ग- वस्तु कम व माँग अधिक होना- आजकल नौकरी थोडी होती है और उसको पाने वाले अनेक। यह तो वही बात हो गई एक अनार सौ बिमार।
घ- स्वयं को निर्दोष साबित करना- मार खाते देख कर महेश घबरा गया और गाँव के लोग समझ गए कि यह काम इसी ने किया है। सच कहा है चोर की दाढी मे तिनका होता है।
ड- जलन होना- भारत की प्रगति को देखकर पाकिस्तान के हुक्मरानों के कलेजे पर सांप लोटने लगते हैं।
च- स्पष्ट घोषणा करना- मैं तो डंके की चोट पर कहूँगा कि आपने लाखों का घोटाला किया है।
6. क- कारण का नाश कर देना।
ख- थोड़ी सी सहायता मिलने पर अधिक कि लालसा रखना।
ग- बड़ा चढ़ाकर कहना। घ-अत्यधिक प्रसन होना।
ड- कबि-कभी दिखाई देना।
7. Do it yourself. 8- Do it yourself. 9- Do it yourself.
10. Do it yourself.

Ch-18 (विराम चिह्न)

क- भाषा के लिखित रूप में भावानुकूल समझने के लिए जिन विराम चिन्हों का प्रयोग ककिया जाता है उन्हें वीरान चिन्ह कहते है।

ख- लाघव। ग-योजक।

1. क- किसी भी शब्द का संक्षिप्त या छोटा रूप लिखना होता है तब लाघव चिन्ह लगाते है। जैसे:- डॉक्टर- डॉ०

ख- जब हम किसी कि कहीं बात को ज्यों का त्यों लिखते है तब दोहरा उद्धरण चिन्ह लगाया जाता है, जैसे:- गाँधी जी ने कहा था- "पाप से गृहा करो,पापी से नहीं।"

ग- निर्देशक चिन्ह का प्रयोग किसी कथन,विवरण, या उदहारण देने के लिए किया जाता है, जबकि योजक चिन्ह का प्रयोग किन्ही दो विपरीतार्थक शब्दों या दो शब्दों को जोड़ने के लिए किया जाता है।

घ-जब वाक्य में पूर्णविराम से पूर्व एक या अधिक बार रुकना पड़े तब अल्पविराम का प्रयोग किया जाता है। जैसे:- किशन, अब तुम चले जाओ।

2. क-। ख-; ग-, घ-('_') ड-? च-() छ- ज-सुख-दुःख झ- o , !
3. क- राजा ने कहा- " सभी मंत्रीगण मिलकर प्रजा की भलाई का काम करें।'

ख- नौकर ने कहा- 'मालकिन रसोई के लिए सब्ज़ियां मँगानी है।"

ग- अध्यापिका ने कहा- सरला,विद्या,रशिम और मंदाकिनी कल नाटक के लिए तैयारी कर लेना।

घ- बच्चों! आप सभी शोर क्यों मचा रहे हैं?

ड- सच्चिदानन्द,हीरानंद और अगय हिंदी के बड़े साहित्यकार थे।

4. क- लाघव ख- उद्धरण ग- प्रश्नवाचक घ- योजक ड- पूर्णविराम
5. क-मीरा की माँ बीमार है; उनका इलाज चल रहा है।

ख- बहार कौन खड़ा है? ग- अरे वाह! कितना सुहावना मौसम है।

घ- बच्चों! आप सभी शोर क्यों मचा रहे हैं?

ड- डॉ० साहब के आते ही वैभव का इलाज शुरू होने लगा।

6. Do it yourself. 7- Do it yourself. 8- Do it yourself.

Chapter 19- Do it yourself. Chapter 20- Do it yourself.

Chapter 21- Do it yourself.

Ch-22 (विराम चिह्न)

1. क- क्रिकेट ख- पत्रकार ग- बिना सोचे समझे
2. क- लाला सदानन्द ख- भगवत गीता सुना रहे थे ग- एल्बम
3. क- दक्षिणी ख- नीलगिरि ग- आम,काजू,चाय-कॉफी

घ- हाँ ड- समुंद्री दृश्य,लेहलहराते खेत, ऊँची नीलगिरि पर्वत शृंखला